thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

जालन्धर

मूल्य : 2 रु.

वर्ष-71, अंक : 18, 7/10 अगस्त 2014 तदनुसार 26 श्रावण सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तुझे जागरूक जगाते हैं

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तं त्वा विप्रां विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम्।। -ऋ 3/10/9

शब्दार्थ- तम्= उस अत्वा= तुझ हव्यवाहम्=हव्यों भोग्य पदार्थों को प्राप्त कराने वाले सहोवृधम्= बल बढ़ाने वाले अमर्त्यम् = अविनाशी को विपन्यवः= स्तुति व्यवहार में कुशल जागृवांसः=जागरणशील, जागरूक विप्राः= मेधावी विद्वान सम्+इन्धते= भली प्रकार प्रकाशित कर सकते हैं, जगा सकते हैं।

व्याख्या- भगवान को पा तो शायद सभी सकते हैं, किन्तु दूसरे के हृदय में भगवद्भक्ति की भावना सभी नहीं जगा सकते। आचार्य परीक्षा या शास्त्री परीक्षा तो अनेक उत्तीर्ण कर जाते हैं, किन्तु वे सभी अध्यापन का कार्य, पढ़ाने का काम कर सकते हैं, इसे कोई भी नहीं मानता।

भगवान की भक्ति क्यों करें? जब तक इसका समाधान न किया जाये, क्यों कोई भक्ति की भावना की उद्भावना करे? संसार में मनुष्य को सबसे अधिक चिन्ता उदरदरी की पूर्ति की रहती है। शरीर-पोषण की भावना प्राणिमात्र में एक समान प्रबल है। यत्न करने पर भी बहुधा अभिलषित पदार्थ नहीं मिला करते! क्यों? अरे! इन पदार्थों का स्वामी कोई और है,वहीं इसकी व्यवस्था करता है। जिसे जिस योग्य समझता है, उसे वह देता है, न अधिक न न्यून। वेद उसे **हव्यवाह** कह रहा है। भोग्य पदार्थों का नाम हव्य है, उनका प्राप्त कराने वाला भगवान ही है।

कई लोग कहा करते हैं- हमने कर्म किया, उसने फल दिया, इसमें उसका क्या उपकार? यह तो कोरा व्यापार है। ऐसे अज्ञानी जन मर्म तक नहीं पहुंचे। ऐसों से कहो, वह न दे कर्मफल, तुम क्या कर लोगे? उसका कर्मफल देना बड़ी कृपा है, महान उपकार है। अरे भाई! देता ही है न कुछ, तुमसे लेता तो नहीं? व्यापार तो तब होता जब तुम कुछ देते। तुम्हारे पास है ही क्या? जो कुछ है सभी उसी का दिया है। पराए धन के धनी। धन्य हो!!

भोग प्राप्ति के लिये मनुष्य को उद्योग करना पड़ता है, इसके लिये बल चाहिये, इसीलिये कहा कि बल के मूल को बढ़ाने वाला **सहोवृधम्** भी वहीं है। **यऽआत्मदा बलदा** यजु. 25/13 जो आत्मानुभूति का दाता है, जो बल का दाता है। अथर्ववेद में प्रार्थना है-

ओजोऽस्योजो मे दाः स्वाहा।
सहोऽसि सहो मे दाः स्वाहा।
बलमसि बल मे दाः स्वाहा।। -2/17।1-3

प्रभो! मैं सच कहता हूं, तू ओज है, मुझे ओज दे, तू सह=सहनशक्ति=बल का मूल है, मुझे बल दे, यह मैं हृदय से कहता हूं। मेरी दृढ़ धारणा है, बलाधार तू ही है, मुझे बल दे।

भोग और भोगसाधन=बल के भंडार को यदि न चिताएंगे तो क्या कर पाएंगे? किन्तु संसार तो सोता है। सोते ने किसी को कभी जगाया है? उस जोत को जागरित ही जगा सकते हैं- **जागृवांसः समिन्धते** जागरूक ही जगाते हैं। वेद और उपनिषद ने कहा-

दिवेदिव ईडयो जागृवभिद्ः।। -ऋ. 3/29/2
उत्तिष्ठत जागृत। -कठ.1/3/14

जागने वाले ही प्रतिदिन उसकी पूजा करते हैं। विप्र की पहचान ही यह है कि वह जागता रहता है, जैसा कि गीता (2/69) में भी कहा है-

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

जिसमें सभी प्राणी सोते हैं, संयमी उसमें जागता है। जिसमें सब प्राणी जाग रहे हैं, ज्ञानी मुनि के लिये वह रात है।

साधारण जन भोग-भावना से ऊपर नहीं उठ पाते। उनका सारा जीवन खान, पान, पहरान, का सामान जुटाने में आता है। ज्ञानी जानता है कि जिसने यह शरीर दिया है वह इसकी रक्षा का सामान भी देगा। मैं तो उसे पाऊं जिसे दूसरी योनियों में पाना दुर्लभ है। नचिकेता के आगे जब भोग-सामग्री प्रस्तुत की गई और उसे प्रलोभन दिया गया कि इसे तू ले ले, किन्तु आत्मतत्व की बात न पूछ, तब उसने मार्मिक शब्दों में अतीव सुन्दर उत्तर दिया। उसने कहा था-

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत् सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते।।
न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा।
जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव।। -कठो. 1/1/26, 27

जो कुछ तुम मुझे देना चाहते हो यह आज है, कल नहीं। फिर यह सम्पूर्ण इन्द्रियशक्ति को क्षीण कर देता है। आचन्द्र दिवाकर भी जीवन मिल जाए तो भी थोड़ा है। नाच-गान का सामान अपने पास रखिए। धन से किसी की तृप्ति नहीं होती, यदि आत्मतत्व का ज्ञान हो गया तो धन भी प्राप्त कर लेंगे। जब तक भोग है जिएंगे। मुझे वर तो वही लेना है।

जागरणशील होने के साथ विपन्युः स्तुति-व्यवहार में कुशल-समझा सकने में कुशल भी हो, तभी दूसरे को समझा सकेगा।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

हमारा मित्र

-ले० श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर, ग्वालियर

इस संसार में आने के पश्चात् हम बचपन से ही मित्र बनाने लगते हैं। सांसारिक प्रवाह में अनेक मित्र जुड़ते हैं और अनेक मित्र पीछे छूट जाते हैं। जो पीछे छूट जाते है, न हम उन्हें याद करते हैं और न ही वे हमें। हमें बुरा भी नहीं लगता। शायद इसे ही संसार की रीत कहते हैं। यह समझने का मौका आयु के अंतिम पड़ाव में ही मिलता है, उससे पहले नहीं। मैं एक ऐसा मित्र जानता हूँ, जो होता तो जन्म के साथ है, पर जब आप उसे मित्र मानकर चलना प्रारम्भ कर देते हैं तो वह आपका साथ कभी नहीं छोड़ता।

ईश्वर के साथ व्यक्ति ने अनेक सम्बंध बनाये हैं-माता-पिता, गुरूदाता और न जाने क्या-क्या। ये सब सम्बंध ईश्वर को उच्चासन पर और भक्त को नीचे आसन पर बिठा देते हैं। मुझे ये संबंध जोड़ने में उतना आनन्द नहीं आया, जितना मित्र का संबंध जोड़ने से आया। 'मैत्री' शब्द में अपनत्व की प्रगाढ़ता, विश्वास, खुलापन, और बराबर की हिस्सेदारी अन्तर्भूत है। सामान्यतया यही कहते हैं कि संकट में, विपत्ति में जो काम आए वहीं 'मित्र' कहलाता है। यह पैमाना ठीक है, पर छोटा है। मित्र की यह परिभाषा जब दृष्टिगोचर हुई तो मैं उछल पड़ा-सच्चा, मित्र वही है जो आपके अत्यन्त गुप्त भेद को, किसी भी संकट में पड़ने पर प्रकट नहीं करता।

मेरी यह बात वही समझ सकता है, जिसको यह बात अनुभव करने का मौका मिला हो। मौका, मिलता तो अनेक को है पर मित्रता की कलई उतारने का यह स्वर्ण अवसर बन जाता है। दूसरे को चाहे वह निकट संबंधी हो या घनिष्ठ मित्र नीचा दिखा कर, अपना महत्व सिद्ध करने की लालसा इतनी प्रबल होती है कि मित्रता भाड़ में झोंक कर भी वह, वह सुख उठाता ही है। पर, यदि ऐसा मौका मिले और आप परपीड़ा जनित सुख का लोभ संवरण कर पाएं, जो आप अनचाहे उच्चासन पर विराजमान हो जाते हैं और सर्वाधिक विश्वसनीय बन जाते हैं।

मैं व्यक्तिगत जीवन से यथार्थ उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूँगा। नाम-पते का उल्लेख नहीं कर सकूँगा। छदम् नाम-पता भी नहीं लिखूँगा। कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी ने जिनसे मेरा कोई घनिष्ट संबंध नहीं था और परिचय भी कुछ पुराना नहीं था ; मुझसे पूछा कि कार्यालय के पश्चात् मैं उनके घर आ सकता हूँ। कारण पूछने पर कहा कि घर पर ही बताऊँगा। पता पूछ कर घर पहुँच गया। घर पर कहा-पास वाले मकान में चलो। वहाँ जो उन्होंने कथा सुनाई तो मुझे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि एक अनजान व्यक्ति पर उन्होंने इतना भरोसा कैसे किया और उन्हें कैसे विश्वास हुआ कि मैं उनकी सहायता करूँगा। पैतृक जीन्स में निडरता मिली है, शरीर भी काफी हृष्ट-पुष्ट था। मैंने स्वीकृति दे दी। किस्सा यह था कि उनकी नवयौवना पुत्री, एम० ए० की छात्रा, एक मात्र संतान एक आवारा गुण्डे के चंगुल में फंस गई थी। जाने किन परिस्थितियों में उसके घर में आना-जाना हो गया था। दिन ब दिन उस लड़के का शिंकजा कसता जा रहा था। जब पानी सिर से ऊपर हो गया तो उनके लिये जीवन-मरण का प्रश्न बन गया। कॉलोनी में वह और उसके यार-दोस्त चक्कर लगाते ही रहते थे। मैंने उनसे कहा लड़की को बुलाइए, मैं उसे अपने घर ले जाता हूँ। आप सपरिवार सुविधा अनुसार आ जाइए। एक घण्टे में वे लोग भी घर पर आ गए। सुबह दो बजे पठानकोट एक्सप्रेस से वह लड़की को लेकर रिश्तेदारी में जाना चाहते थे। उनका घर स्टेशन के पास ही था इसलिये गुण्डों द्वारा घिर जाने की आशंका के कारण मुझे भी साथ ले गए। लड़की की व्यवस्था कर तीन चार दिन बाद ही ग्वालियर लौट आए। आते ही कहा-एक काम और करो। अभी ग्वालियर में हमारा रहना नहीं हो पाएगा, कहीं रेसीडेन्ट ऑफिस में पोस्टिंग कराओ। यह काम बड़ा था। फिर भी मैंने हिम्मत की। संबंधित अधिकारी को जब बताया कि महाशय जी अपने माता-पिता के साथ मेरे घर पर टिके हुए हैं।

अधिकारी महोदय ने मेरी बात की सत्यता पर पूर्ण विश्वास कर ग्वालियर के बाहर तीन साल के लिये उनकी पदस्थापना तत्काल कर दी। प्रकरण हम दोनों के बीच ही रहा। अब तो मुझे भी सेवानिवृत्त हुए 17 वर्ष हो गये हैं। वह कहाँ हैं, मुझे ज्ञात नहीं। मुझे आज भी प्रकरण यादकर संतोष मिलता है, सुख मिलता है कि उनके परिवार की मर्यादा पर आँच नहीं आई। कुछ घटनाओं का वर्णन कर सकता हूँ पर इसलिये नहीं कर पाऊँगा कि पात्र जीवित है और आस पास घूम रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे कर्म ईश्वर जोड़ कर खाते में अवश्य रख लेता होगा। इस जीवन में ऐसे प्रसंगों से आपका आत्मबल बढ़ता है। ईश्वर पर विश्वास गहराता जाता है, क्योंकि ईश्वर स्वयं करोड़ों लोगों के अत्यन्त गोपन रहस्यों को प्रकटतया उजागर नहीं करता। एक तो यह मानवीय कार्य व्यापार है दूसरे आग लगाकर मज़ा लूटना भी उसका गुण-धर्म नहीं है।

ईश्वर की मित्रता में दूसरा गुण उसकी सहायता करने की अपार सामर्थ्य है। वह जैसी सहायता करता है, उसे देखकर हम अनायास ही कह उठते हैं, यह दैवी सहायता है, प्रभु की कृपा है। वेद मर्मज्ञ पं० शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) ने मुझे एक व्यक्तिगत पत्र में लिखा था कि देवी सहायता की अनुभूति उन्हें जीवन में अनेक बार हुई है और यही अनुभूति ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है। मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी यही कह रहा है। अपने जीवन के कतिपय प्रसंगों को लेखनीबद्ध करता हूँ-

(एक) पत्नि श्रीमती स्वदेश दोनों छोटे बच्चों, मनीषा व अमित को लेकर पठानकोट बस स्टेण्ड पर खड़ी थी। बस आ गई थी और धक्का मुक्की में लोग अपना सामान बस पर चढ़ा रहे थे। मैं भी भरी हुई बड़ी वी० आई० पी० की अटैची लेकर चढ़ गया। जब अंतिम सीढ़ी पर पहुँचा तो अटैची वाला हाथ हवा में लहरा गया और मैं अटैची के नीचे गिरा। मुझे बिल्कुल चोट नहीं आई। पहला विचार यही आया कि यदि गलत एंगल से गिरता और दुर्घटनाग्रस्त हो जाता तो पत्नि बच्चों को कैसे संभालती और कैसे मुझे ? क्या इसे ईश्वरीय सहायता के अतिरिक्त, कुछ कहा जा सकता है ?

(दो) भानजे ज्योति के साथ उसकी स्टेण्डर्ड गाड़ी (बहुत छोटी) में ग्वालियर से, मण्डी हिमाचल जा रहे थे। गाड़ी अच्छी स्पीड पर दौड़ रही थी, होटल पास में ही था कि ज्योति को स्टीरियों में कैसेट चेन्ज करने के लिये झुकना पड़ा। वह झुका और मुझे पेड़ों की हरियाली दिखाई देने लगी। मैं चीख उठा-ज्योति, ज्योति और ज्योति ने जो स्टीयरिंग काटा तो गाड़ी हाइवे पार कर नीचे झाड़ियों में रेत में घुस गई। पत्नि पिछली सीट पर थी और भैया अभी गर्भ में ही था। किसी को कोई चोट नहीं आई। दुर्घटना का असर आज भी गहरा है।

(तीन) 11 फरवरी 14 को ब्रेन हेमरेज का पहला अटैक हुआ। तीन दिन आई. सी. यू. में रखने के बाद डॉक्टरों का निर्णय हुआ कि रक्त का थक्का घुल गया है और मुझे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। 23 को फिर तबियत बिगड़ने लगी। दोपहर का खाना 4 बजे खाया। घुटने मोड़कर, बाहर की तरफ पैर निकाल कर लेटा रहा। 11 बजे तक पत्नि श्रीमती स्वदेश ने दो-तीन बार खाना खाने के लिये कहा तो मनाकर दिया। फिर हाँ, हूँ के अलावा कोई बात नहीं और धीरे-धीरे अचेतावस्था में चला गया। रात 2:30 बजे पत्नी समीपस्थ भान्जे को बुला लाई। यही निर्णय हुआ कि सुबह अस्पताल ले चलेंगे।

सुबह पूर्ण बेहोशी की स्थिति में परिवार द्वारा अस्पताल (प्राईवेट) पहुँचाया गया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

15 अगस्त पर विशेष-

स्वतन्त्रता दिवस

15 अगस्त हमारा राष्ट्रीय पर्व है। इसी दिन हमें 1947 को आजादी मिली थी। यह स्वतन्त्रता हमें बहुत बड़े बलिदानों के पश्चात प्राप्त हुई थी। इस पराधीनता की बेड़ियों को काटने के लिए भारतीयों ने अनेक बलिदान दिए थे, अनगिनत कष्ट सहे थे, अनेकों क्रान्तिकारियों ने हंसते-हंसते फांसी के फन्दे को चूमा था।

स्वतन्त्रता का अर्थ है-अपना राज्य या अपना शासन। जहां पर किसी दूसरे का हस्तक्षेप न हो उसे ही स्वतन्त्र राज्य कहा जाता है। चाहे देश हो, समाज हो या व्यक्ति हो सभी को स्वतन्त्रता प्रिय है। कोई भी व्यक्ति किसी के अधीन होकर नहीं रहना चाहता। इसीलिए किसी कवि ने कहा है-

अधीन होकर बुरा है जीना,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर।
सुधा को तजकर जहर का प्याला,
है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर।।

चाहे कोई कुछ भी कहे परन्तु यह सत्य है कि स्वतन्त्रता की भावना सर्वप्रथम आधुनिक युग के निर्माता क्रान्तिदर्शी महर्षि दयानन्द के मन में ही उठी थी। सन् 1873 ई. में जब महर्षि दयानन्द की भेंट तत्कालीन वायसराय लॉर्ड नार्थ ब्रुक से हुई तो उन्होंने महर्षि दयानन्द जी से पूछा कि क्या आप अपने देश में अंग्रेजी शासन द्वारा उपलब्ध उपकारों का भी वर्णन करेंगे और अपने व्याख्यानों के आरम्भ में ईश्वर से जो प्रार्थना किया करते हैं उसमें भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के निरन्तर स्थिर रहने की भी प्रार्थना किया करेंगे?

इसके उत्तर में महर्षि दयानन्द ने कहा था कि- मैं ऐसी किसी भी बात को मानने में असमर्थ हूं, क्योंकि मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों को अबाध राजनैतिक विकास और संसार के राज्यों में समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। श्रीमान् जी मैं तो नित्य प्रति सर्वशक्तिमान परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि मेरा देश विदेशियों की दासता से मुक्त हो जाए। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में भी महर्षि ने लिखा है-कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

अत: सिद्ध है कि स्वतन्त्रता का बीज सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बोया था। वही बीज धीरे-धीरे अंकुरित हुआ और उसी ने पल्लवित होकर एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लिया, जिसका फल हमें 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता के रूप में प्राप्त हुआ। जिन क्रान्तिकारियों ने इस महान् स्वतन्त्रता रूपी यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी है उनके मार्गदर्शक के रूप में सब श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही हम हर वर्ष 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाते हैं, परन्तु क्या हमने कभी विचार किया है कि स्वतन्त्रता के 67 वर्ष पूर्ण होने पर भी हम पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं भी या नहीं? यह सच है कि आज हम स्वतन्त्र हैं, हम पर विदेशी शासन नहीं है। परन्तु फिर भी हम मानसिक रूप से गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए हैं। हमारा रहन-सहन, खान-पान, विचार, भाषा वही है। अंग्रेज भारत से चले गए परन्तु वे एक ऐसी शिक्षा का प्रचलन कर गए कि भारतवासियों के मन में परतन्त्रता की छाप रह जाए। उनका मानना था कि यह शिक्षा भारतीयों के मन में ऐसी भावना उत्पन्न करेगी, जिससे भारतीय वेशभूषा से तो भारतीय ही रहेंगे लेकिन मानसिक तौर पर वे अपने आपको विदेशी समझेंगे। ठीक यही परिस्थिति आज भारत की है। हम केवल मानसिक रूप से ही परतन्त्र नहीं है। बल्कि वेषभूषा, रहन-सहन, बोल-चाल, खान-पान सभी कार्यों में परतन्त्र हैं।

देश की वर्तमान अवस्था पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि स्वतन्त्रता के पश्चात भारत सांस्कृतिक, चारित्रिक, नैतिक दृष्टि से पतन की ओर अग्रसर है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश की उन्नति, खुशहाली और तरक्की के बारे में हमारे शहीदों ने सपना देखा था वो सपना अधूरा ही रह गया है। आज देश में अनेक प्रकार की बुराईयां फैल रही हैं, बलात्कार की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं, युवा वर्ग नशे में अपने यौवन को बर्बाद कर रहा है। जो देश कभी विश्व गुरू कहलाता था, जिस देश की गौरव गाथा दिशा-दिशाओं में गाई जाती थी, जिस देश में लोग चरित्र की शिक्षा लेने के लिए आते थे, जो देश कभी सोने की चिड़िया कहलाता था। आज वही देश अनेक प्रकार की बुराईयों, कुरीतियों पाखण्डों से जकड़ा हुआ है। जिस देश में चरित्र की शिक्षा दी जाती थी, आज वही देश चरित्रहीनता का शिकार हो रहा है। जिस युवा वर्ग को राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान देना चाहए था, आज वही युवावर्ग नशे की चपेट में आकर अपनी जवानी को बर्बाद कर रहा है। जिस देश की युवाशक्ति चरित्रहीन हो जाती है, उस राष्ट्र की भविष्य अन्धकारमय हो जाता है। जो देश अपनी समृद्ध संस्कृति और सभ्यता के लिए प्रसिद्ध था, आज वही देश दूसरों की संस्कृति और सभ्यता को अपनाकर अपने आपको श्रेष्ठ समझता है। आज का मनुष्य अंग्रेजों की संस्कृति, सभ्यता, उनका रहन-सहन, खान-पान, दिनचर्या, रात को लेट सोना, सुबह लेट उठना आदि अपनाकर अपने आपको आधुनिक समझता है।

अत: आईये 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर हम सब मिलकर शपथ लें कि हम भारत की एकता और अखण्ड़ता को बनाए रखने के लिए तन-मन-धन से जुट जाएं और जो हमारी प्राचीन संस्कृति, और सभ्यता है उसे अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन को सफल बनाते हुए स्वतन्त्रता के मूल्य को समझने का प्रयत्न करें। देश में जो भी कुरीतियां, बुराईयां, बलात्कार जैसी घटनाएं, भ्रष्टाचार आदि फैल रहे हैं उन्हें सभी मिलकर दूर करने का प्रयास करें। अगर हमारी संस्कृति, सभ्यता और नैतिक मूल्यों का पतन होता है तो यह समझो कि हमारी स्वतन्त्रता का पतन हो रहा है। हमारा स्वतन्त्रता दिवस मनाना तभी सार्थक हो सकता है यदि हम पूर्ण रूप से अपने आपको राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा। **-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा**

thearyasamaj.org

वेदाङ्गपरिचय

-ले० रविदत्त शर्मा एम. ए. (वेद) आर्य समाज शामली

वेदों का अध्ययन करने के लिए षडङ्ग ज्ञान परमावश्यक है। महाभाष्य में महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं कि ब्राह्मण को बिना किसी कारण के षडङ्गवेद का अध्ययन और ज्ञान करना चाहिये-

''ब्राह्मणेन निष्कारणों धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च''

ब्राह्मण शब्द से यहाँ द्विज का ग्रहण होगा। द्विज के लिये छ अङ्गों सहित वेद का ज्ञान आवश्यक बताया गया है। द्विज को यह नहीं विचारना कि वेद पढ़कर क्या लाभ होगा ? निष्कारण का अर्थ है अनिवार्यरूप से। वेदाङ्गों का उल्लेख पाणिनीय शिक्षा में प्राप्त है-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽय पठ्यते।

ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।।

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।

तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

वेदरूपी पुरुष के छन्द पाँव हैं, कल्प हाथ हैं, ज्योतिष नेत्र, निरूक्त श्रोत्र, शिक्षा प्राण तथा व्याकरण मुख है। अंगोंसहित वेदाध्ययन करके ही वेदज्ञ-पद प्राप्त होता है। मुण्डक-उपनिषद् में अपरा विद्या की चर्चा करते हुए अङ्गिरा ऋषि शौनक को बताते हैं कि अपरा विद्या ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद-अथर्ववेद-शिक्षा-कल्प-व्याकरण-निरूक्त-छन्द-ज्योतिष है अर्थात् चार वेदों छः शास्त्रों का नाम अपरा विद्या है-'तत्रापरा ऋग्वेदों यजुर्वेदः सामवेदोऽथ-र्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं छन्दो ज्योतिषामिति।' इसी विषय को एक अन्य विद्वान् ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं छन्दसां चयः।

ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गानि षडेव तु।।

शिक्षा-शिक्षा ग्रन्थ वर्णोच्चारण विधि का वर्णन करते हैं। जिसके द्वारा वेदमन्त्रों का उच्चारण शुद्ध हो उसे शिक्षाशास्त्र कहते हैं। शिक्षाशास्त्र की उपयोगिता के सम्बन्ध में तैत्तिरीय उपनिषद् में उल्लेख प्राप्त है-

'शीक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्। साम संतानः।'

बल का अर्थ प्रयत्न है जो ब्राह्य तथा आभ्यन्तर भेद से दो प्रकार का होता है। मुख की ब्राह्य आकृति कैसी हो, होठों की कैसी स्थिति हो, यह बाह्य प्रयत्न है। अन्दर से कण्ठ-जिह्व आदि अवयवों को व्यवस्थित करना आभ्यन्तर प्रयत्न कहलाता है। साम का अभिप्राय संगीत से है। संतान का अर्थ सन्धि है। शिक्षाशास्त्र का उद्देश्य है प्रत्येक वर्ण-स्वर-मात्रा आदि का स्पष्ट उच्चारण। श या ष का स, व का व न बोला जाय। मात्रा के ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत तीन भेद होते हैं। ह्रस्व की एक मात्रा, दीर्घ की दो मात्राएँ तथा प्लुत की तीन मात्राएँ होती हैं। स्वर भी उदात्त अनुदात्त-स्वरित तीन प्रकार के होते हैं। ऊँचे स्वर से बोलना उदात्त, नीचे स्वर से बोलना अनुदात्त तथा मिश्रित (उदात्त + अनुदात्त) स्वर से उच्चारण करना स्वरित कहलाता है। अशुद्ध स्वर का उच्चारण करने वाला अनिष्ट का भागी होता है-

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तपर्थमाह।

स वाग्वज्रो यजमानं हिनरित यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराघात्।।

पाणिनीय शिक्षा-५२

मन्त्र का प्रयोग जब स्वर अथवा वर्ण से हीन करके किया जाता है तब वह मिथ्या ढंग से प्रयुक्त हो कर उस अर्थ को व्यक्त नहीं करता, उलटे वह वाग्वज्र होकर यजमान का अनिष्ट कर देता है। शिक्षा ग्रन्थ बहुत से हैं परन्तु सम्प्रति पाणिनीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा का सर्वाधिक प्रचलन है। वेदपाठी को शिक्षाग्रन्थों का अध्ययन करना अभीष्ट है।

कल्प-कल्पसूत्रों में विविध यज्ञों व संस्कारों का वर्णन है एवं मन्त्रों का अनेक कर्मों में विनियोग भी प्रतिपादित है। वृत्तिकार विष्णुमित्र के मत से कल्प वे ग्रन्थ हैं जिनमें वेदविहित कर्मों का सुव्यवस्थित रूप से वर्णन है-

'कल्पो वेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पना-शास्त्रम्।'

कर्मकाण्ड के विस्तृत विधि विधानों, विविध प्रयोगानुष्ठानों, नियमोंपनियमों, सामाजिक प्रथा-परम्पराओं और लोक-आस्थाओं का संक्षिप्त एवं असन्दिग्ध रूप से प्रस्तुतीकरण ही कल्पसूत्रों का अभीष्ट है। इस समय लगभग ५० कल्पसूत्र उपलब्ध हैं जिनमें ४२ कर्मों का प्रतिपादन है-१४ श्रौतयज्ञ, ७ गृह्ययज्ञ, ५ महायज्ञ और १६ संस्कार। सम्पूर्ण कल्पसूत्र-साहित्य का वर्गीकरण चार श्रेणियों में किया गया है-श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्वसूत्र।

श्रौतसूत्र श्रौत यागों पर आधारित हैं इनमें कात्यायन का श्रौतसूत्र प्रमुख है। धर्मसूत्रों में वर्णाश्रमधर्मादि का उल्लेख है। शुल्व सूत्रों में यज्ञवेदी के निर्माण की विभिन्न गणित एवं ज्योमिति सम्बन्धी विधियों का प्रतिपादन किया गया है। गृह्यसूत्र प्रायः गृहस्थ जीवनचर्या से सम्बद्ध हैं। इनमें गृहस्थजीवन से सम्बन्धित कर्मों का वर्णन हुआ है। इन ग्रन्थों में स्मृतियों की परम्पराओं की झलक मिलती है।

व्याकरण-व्याकरण को वेद का मुख बताया गया है। यह त्रिभुवन की ज्योति है। यदि शब्दानुशासन-शास्त्र अर्थात् व्याकरण का प्रकाश संसार में न होता तो सर्वत्र अज्ञानान्धकार छा जाता-

इदमन्धं तमः कृत्सनं जायेत भुवनत्रयम्।

यदि शब्दाहये ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

लोकव्यवहार भाषा से चलता है और बिना व्याकरण के कोई भाषा प्रतिष्ठित नहीं होती। शब्दसाधुत्व व्याकरण का मुख्य प्रयोजन है। यदि हम व्याकरण से शोध कर शब्द का प्रयोग नहीं करते तो अपशब्द का प्रयोग करते हैं। कोई पिता अपने पुत्र से कहता है-

यद्यपि बहु नाधीषे पठ पुत्र तथापि व्याकरणम्।

स्वजनः श्वजनों मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत्।।

वररूचि ने व्याकरण के प्रयोजन को वार्तिक ग्रन्थ में इस प्रकार निर्दिष्ट किया है-

'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्'

अर्थात् वेद की रक्षा, ऊह, लघु और असन्देह व्याकरण का प्रयोजन है। वेद का वेदत्व प्रतिष्ठित रहे यही वेद की रक्षा है। 'भद्रं कर्णेभिः' में कर्णैः है या कर्णेभिः इसका पता व्याकरण से ही चलता है। ऊह का अर्थ है तर्क-वितर्क। वेद में विभिन्न प्रकार से व्यत्यय होता है, इसका ऊहापोह व्याकरण के बिना सम्भव नहीं। जो व्यक्ति व्याकरण नहीं जानता वह लिङ्गों और विभिक्तियों को यथाप्रसंग नहीं बदल सकता अतः ऊह के लिये व्याकरण पढ़ना चाहिये। इसी प्रकार आगम का ज्ञान भी शब्दशास्त्राधीन है। मन्त्रों में जनासः देवासः आदि प्रयोगों में असुक् आगम का ज्ञान 'आज्जसेरसुक्' व्याकरणसूत्र से होता है। लाघव का अर्थ है अल्प शब्दयोजना से विस्तृत अर्थ प्रदान करना। यह भी वैयाकरण ही कर सकता है। सन्देह की निवृत्ति भी व्याकरण से ही होती है यथा 'स्थूलपृषतीम्' इस प्रयोग में कर्मधारय समास है अथवा बहुब्रीहि समास, इसका निवारण स्वरज्ञान से ही सम्भव है। समस्त प्रजोयनों का मौलिभूत प्रयोजन व्याकरण है अतः सर्वप्रथम व्याकरण का अध्ययन अपेक्षित है।

निरूक्त-वनैदिक शब्दकोश को निघण्टु का निर्वचन या निरूक्ति ही निरूक्त है जैसे यास्काचार्य ने वैदिक शब्दों का निर्वचन किया है और उस ग्रन्थ का नाम निरूक्त है। प्रकरणानुसार शब्द का अर्थ ग्रहण करने की क्षमता निरूक्त के अध्ययन से ही उत्पन्न होती है। शब्द से अर्थ प्राप्त करने के पाँच तरीके हैं-वर्णागम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णलोप तथा धातु के अर्थ का आधार। इसी दृष्टि से पाँच प्रकार का निरूक्त बताया गया है-

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।

धातोस्तदर्थाभिनयेनयोगस्तदुच्यते पञ्चविर्धनिरूक्तम्।।

निरूक्त का अवलोकन करने से सम्पूर्ण रहस्य स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है।

छन्द-वेदों में मन्त्र प्रायः छन्दोबद्ध हैं। छन्द के ज्ञान के बिना मन्त्रों का उच्चारण, यति-विराम का प्रयोग सुष्ठु नहीं हो सकता। इसलिये छन्दशास्त्र का ज्ञान अनिवार्य है। मन्त्र के प्रत्येक चरण को अलग-अलग करके समझना तभी सम्भव है जबकि छन्द की जानकारी हो। छन्दशास्त्र का 'पिङ्गल-छन्दसूत्र' सर्वाधिक प्रसिद्ध है। उस ग्रन्थ में वैदिक व लौकिक छन्दों का विवेचन है। गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप-बृहती-पङ्क्ति-त्रिष्टुप्-जगती, ये सात छन्द हैं। गायत्री में २४ मात्राएँ होती हैं, एक मात्रा कम होने पर २३ मात्राओं का निचृत गायत्री कहलाता है। ४ मात्रा बढ़ाते जाते हैं तो जगती तक 48 मात्राएँ हो जाती हैं अर्थात् जगती छन्द में अड़तालीस मात्राएँ होती हैं। २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, यह मात्राओं का क्रम है।

ज्योतिष-वेदाङ्गों में ज्योतिष का भी अपना महत्त्व है। कालगणना के लिये ज्योतिष का सहारा लेना पड़ता है। सम्वत्सर-अयन-ऋतु-मास-पक्ष-तिथि-बार-नक्षत्र आदि की जानकारी ज्योतिष-शास्त्र से ही सम्भव है। दर्श-पौर्णमास यज्ञ करने के लिये अमावस्या-पूर्णिमा का पता लगाना जरूरी है। वैसे भी ज्योतिष वेद का नेत्र है। शरीर में जो महत्त्व नेत्र का होता है वही महत्त्व ज्योतिष का है।

thearyasamaj.org

शारीरिक बल के लिए प्रभु से प्रार्थना करें

-ले० डॉ० अशोक आर्य 104 शिप्रा अपार्टमैंट कौशाम्बी

वेद समविकास पर बल देता है। सब का असमान रूप से विकास हो, इस भावना के अंतर्गत वेद कहता है कि जब समान रूप से पुरुषार्थ किया जाता है तो विकास भी समान रूप से ही होना चाहिए। यह एक आधारभूत सत्य है। इस सत्य पर ही विचार करते हुए ऋग्वेद का यह मंत्र इस प्रकार उपदेश कर रहा है-

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चितीं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनुनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्
।। ऋग्वेद २.२१.६।।

मन्त्र उपदेश करते हुए कह रहा है कि हे परमैश्वर्य सम्पन्न ईश्वर। हम उत्तम ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं, इसके लिए आप हमें उत्तम बलों को प्राप्त करावें ताकि इन बलों की उत्तमता के कारण हम उत्तम ज्ञान की प्राप्ति के लिए कर्मकुशल पुरुष के ज्ञान की और अग्रसर हों, स्थापित हों। इससे यह स्पष्ट होता है कि जब तक हम कर्म कुशल नहीं बनेंगे, पुरुषार्थी नहीं बनेंगे, तब तक हम उत्तम ज्ञान को पाने के अधिकारी नहीं बन सकते। उत्तम ज्ञान को पाने के अधिकारी होने के लिए कर्मकुशल अर्थात् पुरुषार्थी होना आवश्यक है। इसके बिना हम कुछ भी उत्तम की प्राप्ति नहीं कर सकते।

केवल पुरुषार्थी अथवा कर्म कुशल होने से भी काम नहीं चलता। इसके साथ ही साथ हमारे पास सौभाग्य, उत्तम धर्म और यश का होना भी आवश्यक है। अच्छे भाग्य के साथ उत्तम धर्म का संयोग जब होता है तो यश स्वयमेव ही आ जाता है क्योंकि सौभाग्यशाली वह ही होता है जो धर्म परायण होने के कारण यश और कीर्ति को पाता है। वास्तव में धर्म पर आचरण करने वाला व्यक्ति सदा परोपकार के मार्ग पर चलते हुए सदा दूसरों की सहायता की इच्छा रखता है। जब वह जनसेवा के कार्य करता है तो स्वयमेव ही उसका यश और कीर्ति दूर-दूर तक चली जाती है। जब वह यह सब कार्य शिक्षा के क्षेत्र में करता है तो अनेक विद्यार्थी उसका मार्ग दर्शन प्राप्त कर उत्तम ज्ञान को पाने में सफल होते हैं तथा जहां भी जाते हैं, उसका गुणगान करते हैं। इस प्रकार उसका यश व कीर्ति दूर-दूर तक चले जाते हैं।

इसके साथ ही मन्त्र कह रहा है कि भौतिक और आध्यात्मिक कष्ट अर्थात् सम्पति से शम, दम, उपरति, तितिक्षा अथवा द्वंद्व सहिष्णुता, श्रद्धा तथा समाधान के समावेश से हमारी ज्ञान सम्पति, निर्भयता, चितशुद्धि आदि रूप दैवी सम्पति जो है, उसकी हमारे में वृद्धि हो। इससे हमारी पुष्टि हो।

मन्त्र आगे कहता है कि इस सब के कारण हमारा शरीर निरोग हो। हम ठीक प्रकार से स्वास्थ्य लाभ पावें। हमारी वाणी में माधुर्य हो क्योंकि मधुर वाणी वशीकरण का काम करती है। इस वाणी की मिठास से ही हमें बहुत से सहयोगी मिल जाते हैं। हमारे लिए सब दिन उत्तम हों, इसके लिए हम ऐसा यत्न करें। इस प्रकार हम अपनी शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्तियों को विकसित करें तथा सदैव प्रसन्न रहें। हे प्रभु ! इस प्रकार की शक्ति हमें प्रदान करें। वेद हमारे सामने एक आदर्श स्थापित कर रहे हैं। इसके साथ इस आदर्श को प्राप्त करने का उपदेश भी हमें दे रहे हैं। वेद आदेश देता है कि इसे पाने के लिए हम सदा पुरुषार्थ करें, प्रयत्न करें।

हमारी आज की शिक्षा की यह एक विडम्बना है कि आज का शिक्षक मात्र अध्यापक है, वेतन भोगी है, चांदी के चन्द सिक्कों से बिका हुआ है। उसके पास जीविकोपार्जन का अन्य कोई साधन भी नहीं है और न ही स्वेच्छा से पढ़ाने की उसे स्वतंत्रता ही है। इस कारण कुछ रटा रटाया ही उसे पढ़ाना होता है। उसे न हमारे शारीरिक विकास की चिंता है न भौतिक अथवा आध्यात्मिक कष्ट की चिंता ही, जो मानवीय ज्ञान विज्ञान के विकास के लिए आवश्यक तत्व हैं इसलिए हमें उत्तम ज्ञान की प्राप्ति के लिए वेद की शरण में जाना ही होगा। अन्य कोई उपाय है ही नहीं।

धर्म का पालन करो आर्यो

-पं० नन्द लाल निर्भय भजनोपदेशक, पत्रकार आर्य सदन-बहीन, जनपद-पलवल (हरियाणा)

भारत तक सब नर-नारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
फैला था पाखण्ड जगत में, घोर अंधेरा छाया था।
भूल गए थे जगदीश्वर को, दया-धर्म बिसराया था।।
व्याकुल थी दुनियाँ सारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
धर्म समझकर यज्ञों में, नर बलि यहाँ दी जाती थी।
देवों को खुश करने को, गौ हत्या नित की जाती थी।।
अज्ञान यहाँ था भारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
बाल विवाह, अनमेल विवाह, इस आर्यवर्त्त में होते थे।
ऋषियों के सुत-सुता हजारों, देव भूमि में रोते थे।।
तब भी दुर्दशा हमारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनों पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।।
लाखों विधवाएँ बेचारी, वेश्याएँ बन जाती थीं।
पवन, ईसाई ले जाते थे, जीवन भर दुख पाती थीं।।
था करुण-क्रंदन जारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।।
ईश्वर की कृपा से, भारत में, ऋषि दयानन्द आए।
किया वेद प्रचार रात-दिन, कभी नहीं वे दहलाए।।
ऋषि थे अद्भूत ब्रह्मचारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
पोप, पादरी, मुल्ला, पण्डे, ढोंगी सभी पधाड़े थे।
वेद विरोधी नास्तिकों के, ऋषि ने होश बिगाड़े थे।।
ऋषि थे त्यागी-तपधारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
वेद विरोधी धूर्त कुचाली, जग में बढ़ते जाते हैं।
माँसाहारी, दुष्ट शराबी, भ्रष्टाचार बढ़ाते हैं।।
है श्रेष्ठ जनों की ख्वारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
भारती है अफशोस आर्यो ! आपस में तुम लड़ते हो।
धन दौलत अरू उच्च पदों पर, वृथा रोज झगड़ते हो।।
है फूट बुरी बीमारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
कुदुम्ब कबीला, माल खजाना, पड़ा यहीं रह जाएगा।
धर्म एक है सच्चा साथी, अन्तिम साथ निभाएगा।।
ऋषियों की शिक्षा प्यारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।।
''नन्दलाल'' ऋषि दयानन्द के, उपकारों को याद करो।
धर्म का पालन करो आर्यो ! जीवन मत बर्बाद करो।।
बन जाओ परोपकारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।

thearyasamaj.org

वैदिक जीवन पद्धति श्रेष्ठ व सर्वोत्तम

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

(गतांक से आगे)

भावी समय में भी कर्मानुसार यह सभी योनियों में जन्म लेता रहेगा और मोक्ष को प्राप्त होता रहेगा। प्रकृति जड़ तत्व है। यह ईश्वर के वश में अर्थात् परतन्त्र है। यह भी अनादि, नित्य व अविनाशी है। यह कारण प्रकृति सत्, रज व तम् गुणों वाली अत्यन्त सूक्ष्म है जो ईश्वर की प्रेरणा से महतत्व, अहंकार, ज्ञान इन्द्रियों, कर्म इन्द्रियों, मन, बुद्धि, पंच भूतों आदि विकारों को प्राप्त होकर अनेक परिवर्तनों से गुजरती हुई कार्य प्रकृति के वर्तमान स्वरूप को प्राप्त होती है।

ईश्वर, जीव व प्रकृति के बारे में जान लेने पर अब हम जीव के कर्म-फल सिद्धान्त की भी चर्चा करके उसकी मुख्य-मुख्य बातों को जान लेते हैं। जीवात्मा ने अपने पूर्व जन्म तक जो कर्म किए हैं, उन कर्मों का जो भाग अभी तक भोगा नहीं गया है वह हमारा 'प्रारब्ध' कहलाता है जिसकी उपमा जमा-पूंजी से की जा सकती है। जैसे कि किसी बैंक में जमा धनराशि में जमा करने व निकालने पर धनराशि घटती व बढ़ती रहती है उसी प्रकार कर्मों के दो खाते हैं एक अच्छे, पुण्य या शुभ कर्मों का और दूसरा बुरे, अशुभ या पाप कर्मों का। जब हम इस जन्म में कोई शुभ कर्म करते हैं तो वह शुभ कर्मों के खाते में जुड़ जाता है और जब हम पूर्व किए हुए किसी शुभ कर्म का फल भोगते हैं तो वह शुभ कर्मों के खाते में से घट जाता है। इसी प्रकार अशुभ या पाप कर्म के खाते में घटता-बढ़ता रहता है। जीवन बीत जाने वा मृत्यु के आने पर खाता अस्थाई रूप से बन्द हो जाता है और जमा कर्मों के आधार पर ईश्वर हमारे अगले जन्म का निर्धारण करता हैं जो मृत्यु के कुछ समय बाद हमें मिलता है। इस बात को जान कर प्रत्येक मनुष्य को सदा सर्वदा शुभ या पुण्य कर्म ही करने चाहिये। परन्तु होता यह है कि मनुष्य का मन नाना प्रकार के संस्कारों से प्रभावित होता है। वह कई बार तात्कालिक लाभ के प्रलोभन में अशुभ कर्म भी कर लेता है जिसका परिणाम कालान्तर में दुःख भोगने के रूप में सामने आता है जबकि पुण्यात्मायें प्रलोभनों में फंसती नहीं हैं।

आजकल आम आदमी के जीवन व्यतीत करने की जो पद्धति है वह स्वदेशी, पाश्चात्य व कुछ अन्य देशीय मान्यताओं, संस्कृति व सभ्यता पर आधारित और कुछ समयानुकूल है। इस जीवन पद्धति में विवेक का अभाव देखा जाता है। इसमें न तो सोने का और न जागने का निश्चित समय होता है और न ही खाने व पीने के पदार्थों का ही उपयुक्त ज्ञान है। वस्त्र आदि के धारण करने का ज्ञान भी मुख्यतः हमारी युवा पीढ़ी के युवक-युवतियों को नहीं है। लोग ऐसी-ऐसी वस्तुओं का सेवन करते हैं जिनका परिणाम भविष्य में अनिष्ट के रूप में सामने आता है व आयेगा।

अतः इस क्षेत्र में जागरूक व सावधान होने की आवश्यकता है। इसके विपरीत हमारी प्राचीन जीवन पद्धति बहुत ही वैज्ञानिक एवं जीवन में सुख शान्ति प्रदान करने वाली है। इसके अनुसार हमें आलस्य का त्याग कर शुभ व वेद विहित कर्म में व्यस्त रहते हुए 100 वर्ष जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिये। सन्ध्या के मन्त्रों में यह भी प्रार्थना है कि हम 100 वर्षों तक देखते रहें, 100 वर्षों तक जीवित रहें, इतने ही वर्षों तक सुनें तथा जीवन भर हमारी वाक् शक्ति बनी रहे। हम इससे भी अधिक आयु तक स्वतन्त्र व पराश्रित न होकर सुखी जीवन व्यतीत करें, ऐसी प्रेरणा परमात्मा हमें करते हैं। हम देखते हैं कि देश व विदेश में 100 वर्षों से कुछ अधिक आयु के लोग जीवित भी हैं जो प्राचीन वैदिक ज्ञान को सत्य व व्यवहारिक सिद्ध कर रहे हैं। वेदों के अनुसार हमारा जीवन-'वर्ण व आश्रम पद्धति' में ढाला गया है। 100 वर्ष के अनुमानित जीवन को 25-25 वर्षों के चार भागों में बांटा गया है जिसका पहला भाग ब्रह्मचर्य आश्रम कहलाता है जो विद्याग्रहण, अध्ययन व व्रत पालन के प्रशिक्षण लेने व उसमें प्रवीण होने का काल है।

पृष्ठ 2 का शेष- हमारा मित्र.....

डॉक्टरों को बुलाया गया। डॉक्टरों की राय थी कि ब्रेनहेमरेज फिर हो गया है। आवश्यक जाँचों के पश्चात् तत्काल ऑपरेशन कराने की सलाह दी गई। पत्नि ने तत्काल कहा कि आप ऑपरेशन की तैयारी कीजिये। आवश्यक धन में काउण्टर पर जमा करा रही हूँ। सब तैयारी में शाम सात बजे गये। सात बजे प्रारंभ हुआ ऑपरेशन साढ़े आठ बजे समाप्त हुआ। दूसरे दिन 24 घण्टे के बाद होश आया। दोनों हाथ पलंग से बंधे थे। दस दिन बाद घर आया। एक माह तक घर के बाहर जाने की इजाजत भी नहीं थी। टायलेट जाने के लिये भी पत्नि पीछे पीछे चलती थी। डेढ़ माह के बाद मस्तिष्क की धुंध साफ होने लगी। मन में बार-बार यही विचार उठता था कि पत्नि से पूँछू कि रात 1 बजे से शाम 8 बजे तक, ऑपरेशन प्रारंभ होने तक, तुम्हारी मनः स्थिति क्या रही। पर ताजा घाव कुरदने का मन नहीं हुआ, हिम्मत नहीं हुई, मन का यह संघर्ष चल ही रहा था कि .... अप्रैल 2014, को वेदमर्मज्ञ पं० शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) का पत्र मिला। उस पत्र में पण्डित जी ने दुःख प्रकट किया कि जब आपकी पत्नि मर्मान्तक पीड़ा झेल रही थीं तो उन्होंने हमें (पं० जी को) याद क्यों नहीं किया। मुझे अपनी बात करने का मौका मिल गया। मैंने पत्र पढ़कर सुना दिया और पूछा कि जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी मानसिक स्थिति कैसी थी ? 20 घण्टे से निश्चेत-अवस्था में पड़ा हुआ देखकर क्या विचार आ जा रहे थे। पत्नि ने बिना विलम्ब किये तत्काल कहा कि मुझे ईश्वर पर पूरा भरोसा था कि आप बिलकुल ठीक हो जायेंगे। दूसरे मुझे डॉ० उदेनिया, न्यूरोफिजिशियन जी मेरे कार्यालय सहयोगी के सुपुत्र हैं, उन पर भी पूरा भरोसा था कि इलाज में वह कोई कसर नहीं छोड़ेंगें। दोनों भरोसे में खरे निकले और आप ठीक है।

सवाल यह उठता है कि श्रीमती जी की वैदिक ईश्वर में इतनी प्रबल, दृढ़ आस्था न होती तो वह टोने-टोटके, गंडे-ताबीज, साधु-फकीर, मन्नते, पचास चक्करों में पड़कर, रो-रोकर बुरा हाल कर देती। ऑपरेशन सायं 7:00 बजे प्रारंभ हुआ। सबकी वाणी मौन हो गई। पत्नि ने इसे सुअवसर समझ कर संध्या कर ली। परिवार व बाहर के सभी परिचित लोग उसके धैर्य, मस्तिष्क पर पूर्ण नियंत्रण रख कर, सभी आवश्यक काम व व्यवस्था का संचालन स्वयं करते हुए देख कर आश्चर्य चकित थे। आज भी हैं। मैं अपनी बात नहीं करता पर श्रीमती की बात सुन कर, समझ कर आश्चर्य चकित होता हूँ। स्वयं से ही पूछता हूँ कि क्या मैं ऐसा कर पाता ? ईश्वर के प्रति एकान्त निष्ठा व कर्त्तव्य के प्रति जागरूकता ईश्वर कृपा का ही फल है, ऐसा मेरा मानना है और यही पत्नि श्रीमती स्वदेश ने करके दिखलाया। कर्त्तव्य-कर्म, पूर्ण विचार के बाद स्थिर करना यदि ईश्वर में आस्था का परिणाम नहीं है तो और क्या है ?

अन्य घटनाओं से लेख का कलेवर नहीं बढ़ाना चाहता। महर्षि मानते है कि ईश्वर सहायता करता है पर कब ? जब पूर्ण पुरूषार्थ करने पर भी किसी कठिन समस्या का निराकरण न हो रहा है, तभी प्रार्थना करने पर वह अवश्यमेव सहायता करता है। कोई हल सुझाता है। किसी मित्र, सगे-सम्बन्धी को भेज देता है। कोई न कोई ऐसा बाना बुन देता है, जिससे आपका काम बन जाए और काम न होने वाला हो तो संतोष प्रदान करता है। बस जरूरत है धैर्य की और विश्वास की। उस पर विश्वास की कमी ही हमें इधर-उधर भटकाती है। और यही कमजोरी अमरनाथ, तिरूपति बालाजी, सोमनाथ जी व वैष्णोदेवी व शिरड़ी आदि अन्य अनेक तीर्थों पर भटकन का कारण है। मैं इसे आस्था की पूर्ति हेतु यात्रा नहीं मान सकूँगा क्योंकि आस्था भटकाती नहीं, आश्रय देती है।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा प्रवेश प्रारम्भ

विद्यालय में दो प्रकार के पाठक्रम हैं।

प्रथम पाठयक्रम-महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए कक्षा सात से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवी कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम है।

द्वितीय पाठयक्रम में उपदेशक कक्षाएं चलती हैं। जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकांड विशेष रूप से सिखा कर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से उत्तीर्ण स्नातक आर्यसमाजों अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं।

दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्यसमाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो ज्यादा उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए आचार्य जी से पत्र-व्यवहार द्वारा जानकारी प्राप्त करें।

-सम्पर्क: आचार्य रामदेव शास्त्री पो. ता. टंकारा, जि. राजकोट (गुजरात) पिन. 363650

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य हैं। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल	निवेदक	रामनाथ सहगल
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	शिवराजवती आर्या	(मन्त्री)

आर्य समाज वेद मंदिर कबीर नगर में हवन यज्ञ

आर्य समाज वेद मंदिर कबीर नगर जालन्धर में हवन यज्ञ का आयोजन किया। पं. प्रिंस ने वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ हवन यज्ञ में आहुतियां डलवाई। झंडा चढ़ाने की रस्म पं. चरण दास ने निभाई। इस मौके पर प्रधान अश्विनी कुमार, यशपाल भगत, ओ. पी. भगत, रविंदर बिल्ला, मोहिंदर भगत, मनोज कुमार, सुरेन्द्र कुमार, यशपाल, प्रदीप बल्ली, मास्टर हरी, अजय कुमार, राजेश बिट्टू, भगत पुरुषोत्तम, धर्मपाल आदि शामिल थे।

कुरवाई में पञ्च दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

20 से 24 जून २०१४ तक कुरवाई (विदिशा) के आर्य भवन में आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद पारायण यज्ञ संपन्न हुआ।

वेदपाठी का कार्य आर्य कन्या गुरुकुल की छात्राये कु० मीनाक्षी एवं कु० पूजा ने किया। ५९७७ मंत्रों की आहुति हेतु दोनों समय यज्ञ २-२ घंटे होता था। अंत में आचार्य जी मंत्रो के बारे में व्याख्या करते थे। प्रकारांतर से गृहस्थ की समस्याओं राष्ट्र के प्रति कर्तव्य, ईश्वर भक्ति आदि विषयों पर रोचक सूत्र जन सामान्य को सुनने को मिल जाते थे। माईक की दिशा बस्ती में चारों ओर होने से यज्ञशाला में उपस्थित जनों के अतिरिक्त अन्य जनों को भी लाभ मिलता था। सध्या के उपरांत शाम को गुरुकुल की बेटियां ईश्वर भक्ति के भजन सुनाती थी। श्री राम मुनि जी का एक स्वप्न था कि हमारे घर में चारों वेदों के मंत्रो से यज्ञ हो जावे। ईश्वर कृपा से ४ वर्षों में उनके पुत्र श्री इन्द्रप्रकाश आर्य ने अपने घर पर इस कार्य को पूरा कर लिया।

वयोवृद्ध श्री राम मुनि जी के 5 पुत्र जो मुख्यतया स्वर्ण व्यवसायी है श्री ओमप्रकाश (अधिवक्ता व पत्रकार) सूर्यप्रकाश, रविन्द्र कुमार

इन्द्रप्रकाश, मनोज कुमार सपरिवार सम्मिलित हुए तो वैदिक सिद्धांतों पर पुस्तक की लेखिका श्रीमती गीता सोनी (सागर) सहित 5 पुत्रियाँ भी इस में पुण्य लाभ प्राप्त करने आई थी। म० प्र० जन अभियान परिषद् ग्रामीण अंचल में जो सामाजिक उत्थान का कार्य करती है उसकी एक मीटिंग में समय निकाल कर आचार्य जी का प्रवचन करवाया गया। आस पास के आर्यजनो की उपस्थिति आयोजकों का उत्साह वर्द्धन करती रही। अंतिम दिन आर्य परिवार की ओर से प्रीतिभोज का आयोजन था। इन्द्रप्रकाश आर्य जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कृतज्ञता प्रकट की। **-मन्त्री आर्य समाज**

आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वेद सप्ताह

आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वेद सप्ताह 10 अगस्त से 17 अगस्त 2014 तक बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 10 अगस्त से 16 अगस्त तक पंडित सुन्दर लाल जी शास्त्री के वेद प्रवचन होंगे और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन होंगे। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह इस अवसर पर धर्म लाभ उठावें।

-इन्द्र कुमार शर्मा आर्य समाज, मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर

योग ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 14 से 21 सितम्बर 2014 तक निशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणाधाम, योगासन आदि कराएं जाएंगे तथा दर्शन पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिये साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिये मोबाइल फोन नम्बर 094191-07788, 094197-96949 अथवा 094191-98451 पर तुरन्त सम्पर्क करें। **-भारत भूषण आनन्द आश्रम प्रधान**

thearyasamaj.org

वेदवाणी

शुभ एवं बलवान् सङ्कल्प

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता-सुहवा नो अस्तु। यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम्।।

-अथर्व० १९/४/२

विनय-बहुत बार मुझे स्वयं ज्ञात नहीं होता कि मेरा अभिप्राय क्या है ? मैं अपने आन्तरिक अभिप्राय को स्पष्ट सामने लाने में समर्थ नहीं होता। असत्य भाषण, असत्य चिन्तन करते, नाना भयों या रागों के वशीभूत होते हुए मेरा मानसिक व्यापार इतना कलुषित और कृत्रिम हो गया है कि मैं उसकी गड़बड़ में अपने वास्तविक अभिप्राय को ही खो देता हूँ। अपने सच्चे आशय को दूसरों से छिपाते-छिपाते, वह मुझसे भी छिप जाता है, परन्तु मैं अब इस आत्म-वञ्चना की अवस्था को त्यागता हूँ और आज से सदा अपनी आकूति (अभिप्राय) को स्पष्ट सामने लाकर रखूँगा। मन की इच्छाएँ, अभिलाषाएँ जब बुरी होती हैं, दुर्भगा तथा आसुरी होती हैं, तभी हम प्रायः इन्हें छिपाते हैं। जब ये सुभगा और देवी होती हैं, जब उत्तम ऐश्वर्यों की इच्छा या सबके भले की कल्याणी इच्छा होती है तब भी यदि हम इन्हें छिपाते हैं तो केवल निर्बलता के कारण या किन्हीं झूठे भय व लज्जा के कारण ही ऐसा करते हैं, अतः जब मेरी आकूति सुभगा और देवी है तो मैं क्यों डरूँ ? क्यों छिपूँ ? मैं तो अब इसे सामने स्पष्ट रखता हूँ। मैं आज से अपने जीवन को इतना सच्चा बनाता हूँ, अपने मानसिक क्षेत्र को सत्यज्ञान के प्रकाश से ऐसा प्रकाशित रखता हूँ कि अब मैं मन में घुसी हुई अपनी इस अभिप्राय देवता को हे प्रभो ! जब चाहूँ तब तुरन्त जान सकूँ, पा सकूँ, निकाल सकूँ। मन (अन्तःकरण) का जो निचला 'चित्त' नामक भाग है जहाँ कि विचार, अभिप्राय सुप्त रूप में पड़े रहते हैं या यूँ कहना चाहिए कि जो चित्त इनका बना हुआ है (जिस चित्त की माता अभिप्राय है) उस स्थान से जब मैं चाहूँ तभी अपने अभिप्राय को पुकारकर ला सकूँ। आकूति मेरे लिए सदा सुहवा हो, सुगमता से पुकारने योग्य हो। जब आवश्यकता हो तब मैं उसे पुकारकर वैखरी वाणी के रूप में लाकर खड़ा कर सकूँ। हे प्रभो ! अब मेरे मनोराज्य की सब अव्यवस्था, गड़बड़ दूर कर दो। मैं जिस आशा व इच्छा को लेकर चलूँ, जिस दिशा में चलूँ, तब वही अकेली आशा (इच्छा) मेरे सामने रहे, शुद्ध-रूप में वही प्रकाशमान रहे ; और सब गौण विचार (इच्छाएँ) गड़बड़ न मचाते हुए यथास्थान पीछे रहें। यदि ऐसी व्यवस्था स्थापित हो जाएगी तो मेरी सब आकूतियाँ (अभिप्राय) सङ्कल्पशक्ति बन जाएँगी और वे पूर्ण व सफल हुआ करेंगी।

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल पुराना बाजार, लुधियाना में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल पुराना बाजार लुधियाना में बच्चों के मानसिक आध्यात्मिक तथा बौद्धिक विकास को मद्देनजर रखते हुए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छठी कक्षा से लेकर 12वीं कक्षा तक के बच्चों ने भाग लिया। सभी बच्चों ने रक्षा बन्धन, नशे के दुष्प्रभाव, कम्प्यूटर का महत्त्व आदि अनेक विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले 30 बच्चों में से कक्षा छठी से आठवी तक के वर्ग में आठवीं कक्षा की डोली ने प्रथम स्थान, आठवीं कक्षा की रजनी ने द्वितीय स्थान, सातवीं कक्षा की मुस्कान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। नौवीं तथा बारहवीं तक के वर्ग में दसवीं कक्षा की स्वाति ने प्रथम स्थान, दसवीं कक्षा की प्रीति ने द्वितीय स्थान, तथा ग्यारवीं कक्षा की रीमन और बारहवीं कक्षा की जसप्रींदर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती ज्योति किरन शर्मा जी ने बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए उनकी प्रशंसा की।

इस अवसर पर स्कूल की मैनेजर श्रीमती राजेश शर्मा स्कूल के प्रधान श्री सुशील मोदगिल तथा अन्य सदस्य शामिल थे।

-प्रिंसीपल ज्योति किरन शर्मा

गुरुकुल का आयुर्वेद महान घर-घर में मिले रोगों से निदान

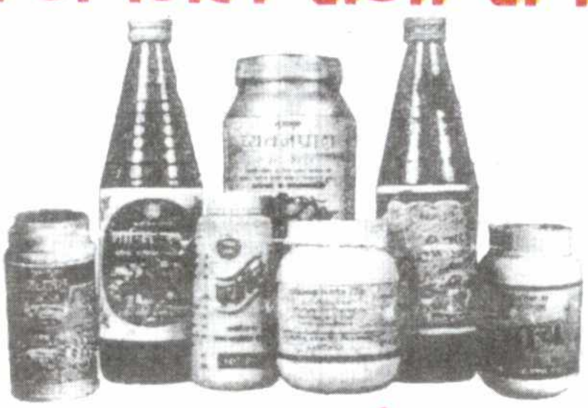

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्धि दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।